20 एक अच्छे स्कूल–प्रमुख की मेरी धारणा

उर्मिला चौधरी

इस लेख के शीर्षक पर विचार करते हुए मैंने उन सभी स्कूल–प्रमुखों के बारे में सोचा जिनसे बीते वर्षों में मेरा परिचय रहा है। एक चेहरा बार–बार उभरकर सामने आता रहा – मेरे अपने बचपन के छोटे से स्कूल की संस्थापक प्राचार्य का चेहरा। वह स्कूल उस वक्त एक अपेक्षाकृत गुमनाम संस्था थी पर अब कोलकाता का काफी विख्यात स्कूल हो गया है। मैं सोच में पड़ गई कि आखिर क्या बात है जो 30 साल से अधिक समय के बाद भी वे मेरे लिए इतनी सजीव हो उठीं? मुझे याद है कि वे हमें पढ़ाती थीं, पर यह बिलकुल याद नहीं कि उन्होंने हमें क्या–क्या सिखाया – सिवाय इसके कि वे अँग्रेजी व्याकरण पढ़ाती थीं। पर मुझे यह जरूर याद है कि उन्हें प्रत्येक विद्यार्थी की हर छोटी–छोटी बात, यहाँ तक कि उसकी पारिवारिक परिस्थितियों की भी जानकारी होती थी। मुझे याद है कि किस तरह वे स्कूल के बरामदे में बच्चों को रोककर उनके भाई–बहिनों, माता–पिता या दादा–दादी,नाना–नानी तक का कुशलक्षेम पूछा करती थीं। प्रत्येक बच्चे को इतने करीब से जान पाने की उनकी इस क्षमता से हम लोग विस्मित थे और सोचते थे कि उनके पास अलौकिक शक्तियाँ हैं!

अब मुझे अहसास होता है कि वे शिक्षण की एक बेहद महत्वपूर्ण हकीकत को समझती थीं – अच्छे शिक्षक वे होते हैं जो बच्चों के शिक्षक हों, न कि विषयों के – जब हम बड़े होते हैं, तो हम अपने शिक्षकों के बारे में यह याद नहीं करते कि उन्होंने हमें क्या पढ़ाया बल्कि यह याद करते हैं कि उनकी वजह से हम कैसा महसूस करते थे। उन्हें पता था कि विद्यार्थियों की व्यक्तिगत परिस्थितियाँ और भावनात्मक दशाएँ उनकी सीखने की क्षमता को प्रभावित करती हैं। वे एक ऐसी स्कूल–प्रधान थीं जिन्होंने कुछ अकल्पनीय किया – एक बाल–मित्र, सुरक्षित और खुशनुमा परिवेश तैयार करने के बारे में सोचा, जहाँ प्रत्येक छात्र या छात्रा स्वयं में मौजूद सम्भावनाओं को पूरा कर सके। यह उन्होंने ऐसे समय में किया जब बाकी सभी स्कूल अंकों और परीक्षा परिणामों के पीछे भागने में लगे थे। उन्होंने सृजनशीलता को बहुत महत्वपूर्ण माना और कला, संगीत तथा रंगमंच को उतना ही महत्व दिया जितना कि शैक्षणिक विषयों को। एक अच्छे स्कूल प्रधान के लिए जरूरी है कि वह आगे की सोच रखे और मेरी स्कूल प्रमुख अपने समय से काफी आगे थीं।

> *अच्छे शिक्षक वे होते हैं जो बच्चों के शिक्षक हों, न कि विषयों के। जब हम बड़े होते हैं, तो हम अपने शिक्षकों के बारे में यह याद नहीं करते कि उन्होंने हमें क्या पढ़ाया बल्कि यह याद करते हैं कि उनकी वजह से हम कैसा महसूस करते थे।*

प्रेम और आदर से भरी मेरी अगली याद उस स्कूल की प्रमुख की है जिसने सबसे पहले मुझे शिक्षिका का काम दिया। हालाँकि मैंने वहाँ केवल एक वर्ष काम किया, पर मैंने शिक्षण के बारे में वहाँ जो भी सीखा वह मेरे लिए आज भी मूल्यवान है। चूँकि वे खुद भी कई सालों तक शिक्षिका रह चुकी थीं, अतः उन्हें इस बात की खूब समझ थी कि कक्षा के भीतर क्या होता है, यानी कि सीखने–सिखाने की पूरी प्रक्रिया से वे परिचित थीं। नतीजतन, जब मेरी जैसी एक अनुभवहीन शिक्षिका अपनी शिक्षण योजनाओं के साथ उनसे मिली, तो उन्होंने झट से मुझे बता दिया कि क्या बात काम करेगी और क्या नहीं। वे सलाह तो देती थीं, पर उन्होंने नए, युवा शिक्षकों को कभी तुच्छ नहीं समझा। वे अच्छे विचारों को सराहती थीं और समस्याओं के लिए समाधान बताती थीं। दरअसल उनके भीतर अपने शिक्षकों को सिखाने–रास्ता दिखाने की और उनके अन्दर के सर्वश्रेष्ठ को बाहर निकाल पाने की अद्‌भुत क्षमता थी। पर ऐसा करते हुए उन्होंने कभी भी स्टाफ–रूम के अन्दर अस्वस्थ प्रतिस्पर्धात्मक माहौल नहीं पनपने दिया। वे खुद भी पढ़ाने को लेकर इतनी उत्साहित रहती थीं कि उनके इस जोश से प्रभावित न होना असम्भव था।

लगता है कि सबसे बढ़िया स्कूल–प्रमुख वे होते हैं जो खुद अच्छे शिक्षक हों और जिन्हें पाठ्यचर्या की पूर्ण समझ हो। बल्कि सभी स्कूल–प्रमुखों के लिए यह जरूरी है कि वे पढ़ाना जारी रखें और स्कूल की रोजमर्रा की गतिविधियों में शामिल रहें–इस प्रकार वे नायकों के रूप में ज्यादा प्रभावशाली हो सकेंगे। दुर्भाग्यवश, बहुत कम स्कूल प्राचार्य इसे एक प्राथमिकता के रूप में देखते हैं क्योंकि वे प्रशासनिक कार्यों में उलझते ही चले जाते हैं। इसी तरह, शिक्षक समुदाय के साथ–साथ स्कूल प्रधान के लिए भी प्रशिक्षण सत्रों में भाग लेना बहुत जरूरी है ताकि वे ताजातरीन पद्धतियों एवं बदलावों से वाकिफ रहें और अपने कौशल तथा ज्ञान को तरोताजा रख सकें। मैंने अपने अनुभव से पाया है कि अक्सर स्कूल–प्रमुख सोचते हैं कि शिक्षकों के लिए आयोजित किए जाने वाले किसी तरह के प्रशिक्षण में भाग लेना उनके लिए समय गँवाने जैसा है।

एक अच्छे स्कूल–प्रमुख के लिए हमेशा ही यह दिमाग में रखना जरूरी है कि सबसे अधिक महत्व बच्चों का है। पालकों, शिक्षकों, समय–सारणियों, पाठ्यचर्या, विभिन्न स्कूली गतिविधियों – सबका ध्यान बस एक ही ओर होना चाहिए – बच्चों के विकास की ओर। एक बार हम यह समझ लेते हैं तो यह भी स्पष्ट हो जाता है कि

प्रत्येक स्कूल–प्रमुख का उद्देश्य होना चाहिए कि वह बच्चों की विशेषताओं में भेद कर पाए। समय आ गया है कि हम यह समझें कि बहुत से स्कूलों द्वारा अपनाई जाने वाली 'सबके लिए एक जैसा उपयुक्त है' की नीति सही नहीं है – यह नीति इन्सान में मौजूद बहुत सी सम्भावनाओं को नष्ट कर देती है।

प्रेरणादायी और महान नायक के रूप में जो तीसरे व्यक्ति मेरे दिमाग में आते हैं, वे अब तक दो प्रसिद्ध स्कूल स्थापित कर चुके हैं। वे काफी विनोदी हैं। उन्हें बच्चों की सहज समझ है और इस बात की भी कि उनके सोचने का तरीका क्या होता है। आत्मविश्वास से भरा उनका कथन– "यह भी बीत जाएगा" – किशोर बच्चों के कई थके–हारे पालकों को अपना मानसिक सन्तुलन बनाए रखने में मददगार होता था। स्पष्ट सोच, तेजी से लिए गए लेकिन सोचे–समझे निर्णय, तपती हुई ईमानदारी और गहरी करुणा उनके कुछ ऐसे गुण थे जिनकी वजह से बाकी लगभग सभी लोगों से उनका कद बहुत ऊँचा था, भले ही उनकी कद–काठी छोटी रही हो।

'अच्छे स्कूल–प्रमुख की मेरी धारणा' के बारे में सोचते वक्त मैंने सही अर्थों में असाधारण कुछ ऐसे नायकों को याद किया है जिनके सम्पर्क में आने का सौभाग्य मुझे इस जीवन में प्राप्त हुआ। यह सूची मेरी माँ का उल्लेख किए बगैर पूरी नहीं हो सकती जिन्होंने कोलकाता के पिछड़े इलाकों में रहने वाले सुविधाहीन बच्चों के लिए एक स्कूल का निर्माण किया। उसकी शुरुआत करते वक्त उनके पास सिर्फ उनका जोश और जुनून था और सभी बाधाओं तथा समस्याओं से निपटने का दृढ़ विश्वास था। उद्देश्य के प्रति अपनी एकनिष्ठता और पूरी तरह से विनम्र स्वभाव की वजह से उन्हें लोगों से खूब आदर और स्नेह मिला। कई तरह से मदद मिली जिससे वे अपने स्वप्न को साकार कर सकीं। सब कुछ छोड़कर सिर्फ अपने लक्ष्य के प्रति कटिबद्ध और पूर्णतः समर्पित होने की उनकी क्षमता से उनके साथियों को भी लक्ष्य की ओर अपना ध्यान केन्द्रित रखने में मदद मिलती थी। मेरी माँ अभी हाल ही में गुजरी हैं। उनके पक्के इरादे को हम याद रखेंगे। इससे हमें उनके स्वप्न को जीवित रखने में मदद मिलेगी।

मैं सोचती हूँ कि क्या यह महज संयोग है कि शिक्षण के ऐसे अद्भुत स्थानों को बनाने और उन्हें आकार देने के लिए निस्वार्थ भाव से काम करने वाली ये चारों महिलाएँ हैं?

उर्मिला चौधरी ला मार्टिनेयर, कोलकाता और श्रीराम स्कूल, नई दिल्ली में (जहाँ कि वे बाद में उप–प्राचार्य बनीं) अँग्रेजी की शिक्षिका रही हैं। उन्हें अँग्रेजी पढ़ाने का 20 साल का अनुभव है। उनके पास बी.एड. और अँग्रेजी में एम.ए.की डिग्रियाँ हैं। इसके अलावा, प्रौढ़ों को अँग्रेजी पढ़ाने का केम्ब्रिज प्रमाणपत्र (सी.ई.एल.टी.ए.) भी है। वर्तमान में वे पाठ्यचर्या लेखन, शिक्षक–प्रशिक्षण और प्रौढ़ों को अँग्रेजी पढ़ाने जैसे कामों के लिए सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं। वे सी.बी.एस.ई. तथा आगा खान फाउण्डेशन की परामर्शदाता भी रही हैं। उन्हें शिक्षक–प्रशिक्षण का व्यापक अनुभव है तथा भारत एवं मध्यपूर्व में उन्होंने इसकी कई कार्यशालाएँ आयोजित की हैं। उनसे urmichow@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।